समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२५ • वर्ष : २९ • अंक : २ (निरंतर अंक : ३३८) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी का ६१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस २३ सितम्बर

पूज्य बापूजी के सद्गुरु भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

सैंकड़ों वर्ष बीत जाते हैं तब हँसते, खेलते, नाचते, गाते पात्र-अपात्र सभीको आत्मविद्या का अमृतपान करानेवाले आत्मसाक्षात्कारी कारक महापुरुष समाज को मिल पाते हैं । देखने की बात यह है कि राष्ट्र उनका कितना महत्त्व समझ पाता है और लाभ उठा पाता है ।

धन्य है वह देश

जहाँ ऐसे जगतोद्धारक संत रहते हैं !

– श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजी

ब्रह्मवेत्ता संतों का जीवन ही जगत के कल्याण के लिए होता है अतएव उनका जगत पर जितना उपकार है उतना और किसीका भी नहीं है । उनका लोकसेवा-व्रत और उनका यथार्थ विश्वप्रेम जगत में कल्याण की जिस सुधा-धारा को बहाता रहता है वह धारा यदि कभी सूख गयी होती तो अब तक सारा जगत सर्वथा राक्षसों का भयानक नरकागार बन गया होता । संत जगत में जिन विशुद्ध सात्त्विक परमाणुओं को फैलाते रहते हैं उन्हींसे सत्त्वगुण और सदाचार की रक्षा होती है।

संत भगवान के प्रत्यक्ष विग्रह हैं । संतों की वेशभूषा, उनकी भाषाशैली, शिक्षा (पढ़ाई-लिखाई) की ओर न देखकर उनकी नित्य समता, बुद्धिमत्तापूर्ण असाधारण सरलता और प्रभुमय जीवन से सबको लाभ उठाना चाहिए। संत विश्व के सूर्य हैं, उसके प्राण हैं, उसके आकाश हैं, उसके हृदय हैं, उसके अवलम्बन हैं, उसके आत्मीय हैं और उसके आत्मा हैं। वे स्वयं सब समय परमात्मा में स्थित रहते हुए ही प्रत्येक प्रतिकूलता में साक्षात् आत्मस्वरूप अनुकूलता का स्वाभाविक अनुभव करते हुए जगत के प्राणियों की दुःखदायी प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिणत करने के लिए प्रयत्नवान रहते हैं। उनकी वाणी से अमर ज्ञानामृत झरता है, उनके नेत्रों से प्रेम की शीतल सुखद ज्योति निकलती है, उनके मस्तिष्क से जगत का कल्याण प्रसूत होता है, उनके हृदय से आनंद की धारा बहती है। जो उनके सम्पर्क में आ जाता है वह पाप-ताप से मुक्त होकर महात्मा बन जाता है। ऐसे संत जिस देश में रहते हैं वह देश पुण्यतीर्थ बन जाता है, वे जो उपदेश करते हैं वह पावन शास्त्र हो जाता है, वे जिन कर्मों को करते हैं वे ही कर्म सत्कर्म समझे जाते हैं।

वह देश धन्य है जहाँ वे रहते हैं, वे माता धन्य हैं जिनकी कोख से वे प्रकट होते हैं, वह मनुष्य धन्य है जो उन संतों के सम्पर्क में आता है, वह वाणी धन्य है जो उनका स्तवन करती है और वे कान धन्य हैं जिनको उनके उपदेशामृत का पान करने का अवसर मिलता है।

संतों की महिमा गाते हुए स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'जो अकिंचन (संग्रह-परिग्रह से रहित), जितेन्द्रिय, शांत, समबुद्धि संतपुरुष मुझको लेकर ही संतुष्ट हैं (अपने आत्मा के अनुभव में ही संतुष्ट हैं) उनके लिए सब ओर आनंद-ही-आनंद है। मुझमें ही चित्त को सदा लगाये रखनेवाले ऐसे पुरुष मुझको छोड़कर ब्रह्मा का पद, इन्द्रपद, चक्रवर्ती राज्य, पाताल आदि का राज्य, योग की सिद्धियाँ और मोक्ष भी नहीं चाहते। मैं ऐसे निरपेक्ष, शांत (जगत के चिंतन से सर्वथा उपरत होकर मेरे ही मनन-चिंतन में तल्लीन), निर्वैर, रागरहित और समदर्शी संत की चरणरज से अपने को पवित्र करने के लिए सदा ही उनके पीछे-पीछे फिरा करता हूँ।'

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २९ अंक : २

निरंतर अंक : ३३८ आवधिकता : मासिक

प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२५ मूल्य : ₹ ४.५०

पृष्ठ संख्या : ३० (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $ ५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $ १२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

✲ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✲

✲ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.सं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ़ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

● लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना : ●

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

● ब्रह्मानुभूति पा लो !

कवर स्टोरी २३ सितम्बर को पूज्य बापूजी का ६१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस है। आत्मसाक्षात्कार क्या है और यह अनुभूति कितनी ऊँची है इसके बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनों में आता है : ४

● ऐसा आश्रम सलामत रहना ही चाहिए
– श्री अरविंद कारियाजी महाराज, कथा-प्रवक्ता......... ६
● शक्ति की उपासना से सत्य की विजय............................ ७
● न्यूयॉर्क के शोधकर्ताओं ने ध्यान को बताया.......................९
● गुरुनिष्ठा और वात्सल्य की मूर्ति पूजनीया माँ महँगीबाजी....१२
● तुम सम कौन उदार परम प्रभु – संत पथिकजी.............. १३
● परमात्मा को जानने का अधिकारी कौन ?
– स्वामी अखंडानंदजी...............................१४
● वहाँ परमात्मा का सदा वास होता है..............................१५
● भोले-भाले हिन्दुओं को बरगलाकर
चलाये जा रहे हैं धर्मांतरण रैकेट – धीरज चव्हाण....... १६
● सुर्खियों में.. १८
● पालक सिर्फ सब्जी नहीं, एक प्राकृतिक औषधि है............२०
● अब हवन से होगा बीमारियों का उपचार !......................२२
● क्यों पड़ा भगवान का नाम माधव ?.............................२४
● आनेवाली पुण्यदायी तिथियाँ व योग.......................... २६
● इसलिए सब ऐसे संतों को आदर से सुनते हैं...................२७

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम। प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल। मुद्रक : विवेक सिंह चौहान। प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद- ३८०००५ (गुजरात)। मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) - १७३०२५। सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

ब्रह्मानुभूति पा लो !

२३ सितम्बर : पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर विशेष

आपने विषय-विकारों पर संयम किया और पंचभौतिक शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को प्रकृति माना तथा द्रष्टा को अपना आत्मा माना - यहीं ज्ञानप्राप्ति की यात्रा पूरी नहीं होती। जैसे घड़े का आकाश तत्त्वरूप से महाकाश है, तरंग का पानी तत्त्वरूप से व्यापक पानी है ऐसे ही यही आत्मा ब्रह्म है, यही आत्मा परमात्मा है और प्रकृति उसका विवर्त❊ है। यहाँ तक की यात्रा को आत्मसाक्षात्कार, ब्रह्मसाक्षात्कार कहते हैं।

२३ सितम्बर को पूज्य बापूजी का ६१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस है। आत्मसाक्षात्कार क्या है और यह अनुभूति कितनी ऊँची है इसके बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनों में आता है :

आत्मदेव को 'मैं'रूप में, फिर ब्रह्मरूप में जानो

'भगवान' शब्द का अर्थ है : 'भ' - जिसकी सत्ता से शरीर का भरण-पोषण होता है वह चैतन्य। 'ग' - जिसकी सत्ता से गमनागमन होता है। 'वा' - जिसकी सत्ता से वाणी स्फुरित होती है। 'न' - ये सब नहीं रहने पर भी जो कभी हमारा साथ न छोड़े उसका नाम है 'भगवान'।

शरीर तो साथ छोड़ देगा लेकिन तुम्हारा भगवान (आत्मदेव) चैतन्य सर्वव्यापक है, वह तुम्हारा कभी साथ नहीं छोड़ता। आकाश में घड़ा है, वह उठा के ले जाते हैं दूसरी जगह तो समझते हैं कि घड़े के साथ उसका आकाश भी ले गये... नहीं। बस दौड़ने लगती है तो वह वहाँ का आकाश

शक्ति की उपासना से

सत्य की विजय

२२ सितम्बर से १ अक्टूबर : शारदीय नवरात्र पर विशेष

किष्किंधा पर्वत पर जहाँ समतल धरती थी वहाँ समय पाकर नारदजी ने भगवान राम और लक्ष्मण भैया को शारदीय नवरात्र के व्रत-उपवास और पूजा-विधि से सम्पन्न किया। उन्होंने व्रत-उपवास किया और दशमी के दिन विजया पूजन करके किष्किंधा से प्रस्थान किया। पुनः चैत्री नवरात्र का व्रत-उपवास रामजी ने किया और फिर शारदीय नवरात्र में युद्ध हुआ तो दशहरा को रावण मारा गया।

२२ सितम्बर से १ अक्टूबर तक शारदीय नवरात्र है। अहमदाबाद आश्रम में हर साल इन नवरात्रों में मंत्र-अनुष्ठान आदि विशेष आयोजन किये जाते हैं और विद्यार्थी सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान करते हैं। इस व्रत के प्रताप से भगवान श्रीरामजी ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

एक बार भगवान श्रीरामजी और लक्ष्मणजी वन में विचार-विमर्श करके 'कैसे रावण पर विजय प्राप्त हो, क्या किया जाय ?' इस भाव में मौन थे। तभी उनको प्रकाश-प्रकाश दिखा, गौर से देखा तो देवर्षि नारदजी आ रहे हैं। दोनों उठकर खड़े हो गये : ''आइये संतप्रवर !''

यह शालीनता है श्रीरामजी व लखनजी की। देवर्षि नारदजी का यथायोग्य स्वागत किया, जंगल में जो भी मिल गया चटाई जैसा वह बिछाया फिर अर्घ्य-पाद्य से उनकी पूजा की। नारदजी ने कहा : ''श्रीराम ! आप मौन और चिंतन में बहुत गहरे उतरे हुए हैं, थोड़े उदास-से लग रहे हैं। आपकी उदासी का कारण मैं जानता हूँ। आप चिंतन कर रहे हैं कि 'रावण पर कैसे विजय प्राप्त हो ?' श्रीराम ! आप भगवान नारायण के अवतार हैं और

न्यूयॉर्क के शोधकर्ताओं ने **ध्यान** को बताया

मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनानेवाला

सहज साधन

हिन्दू धर्म के शास्त्रों ने तथा ऋषि-मुनियों ने ध्यान की बड़ी महिमा गायी है । भगवान शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं :

नास्ति ध्यानसमं तीर्थम् ।
नास्ति ध्यानसमं यज्ञम् ।
नास्ति ध्यानसमं दानम् ।
तस्मात् ध्यानं समाचरेत् ।।

ध्यान के समान कोई तीर्थ, यज्ञ और दान नहीं है अतः हर रोज आदरसहित ध्यान का अभ्यास करना चाहिए । भारतीय दर्शन में ध्यान की इतनी भारी महिमा क्यों गायी गयी होगी इसको आज विज्ञान भी ध्यान के लाभों को जानकर कुछ समझ रहा है ।

परमात्मा को जानने का

अधिकारी कौन ?

– स्वामी अखंडानंदजी

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥

(गीता : ७.२९)

भगवान श्रीकृष्ण ने तीन साधन बताये और फल बताया । तीन साधन क्या हैं ? एक तो 'जरामरणमोक्षाय' माने मुमुक्षा चाहिए जरा और मरण से छूटने के लिए अर्थात् संसार की कोई वस्तु नहीं चाहिए, केवल मोक्ष चाहिए, मोक्षस्वरूप परमात्मा चाहिए। परमात्मा और मोक्ष ये दोनों दो चीज नहीं हैं, एक हैं। अगर परमात्मा से अलग मोक्ष नाम की कोई चीज है तो मिथ्या है। जो परमात्मा है सो ही मोक्ष है, जो मोक्ष है सो ही परमात्मा है। वह तो अविद्या की निवृत्ति की उपाधि से परमात्मा का नाम मोक्ष है। जहाँ विद्या और अविद्या की उपाधि नहीं है वहाँ बंधन और मोक्ष का नाम भी नहीं है –

न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बद्धो न च साधकः ।

हम परमात्मा को पाना चाहते हैं । कैसे परमात्मा को ? बोले, मोक्षोपाधिक परमात्मा को। क्योंकि हम इस समय बंधन का अनुभव कर रहे हैं। शब्द का बंधन, स्पर्श का बंधन, रूप का बंधन, रस का बंधन, गंध का बंधन, संबंध का बंधन, मैं–मेरे का बंधन – ये सब बंधन हैं। तो इन बंधनों से जो मुक्ति है उस मुक्ति–दशा में हम परमात्मा का अनुभव करना चाहते हैं अर्थात् बंध के विरुद्ध जो दशा है उसका नाम मुक्ति है और परमात्मा तो बंधन में भी और मुक्ति में भी है। परंतु बंधन–दशा में परमात्मा का अनुभव स्पष्ट नहीं हो रहा है इसलिए हम मुक्ति–दशा की कल्पना करके उसमें परमात्मा का स्पष्ट अनुभव कर लेना चाहते हैं। असल में बंधन–दशा जैसे कल्पित है वैसे मुक्ति–दशा भी कल्पित है। तो बंधोपाधिक परमात्मा में आनंद नहीं आ रहा है, मोक्षोपाधिक परमात्मा में आनंद आवेगा इसलिए बंधन की अपेक्षा से हम मोक्ष की कल्पना करते हैं। और अविद्या निवृत्ति का अधिष्ठान और प्रकाशक स्वयं परमात्मा है इसलिए उसीमें औपचारिक दृष्टि से मोक्ष शब्द का प्रयोग किया जाता है।

एक बात तो यह ध्यान में रखने की है साधक के लिए कि उसको कोई भोग नहीं चाहिए है, सम्पूर्ण

सामने आयीं चौंकानेवालीं घटनाएँ

भोले-भाले हिन्दुओं को बरगलाकर चलाये जा रहे हैं धर्मांतरण रैकेट

धर्मांतरणकारी तत्त्व किस प्रकार भिन्न-भिन्न माध्यमों से लोगों को धर्मांतरण के शिकंजे में फँसा रहे हैं वह यहाँ दिये जा रहे हाल ही के कुछ उदाहरणों से समझ सकते हैं।

❊ हाल ही में छांगुर बाबा उर्फ जमालुद्दीन को उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर धर्मांतरण रैकेट चलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया । उसके गिरोह के मुस्लिम लड़कों द्वारा खुद को हिन्दू बताकर सोशल मीडिया आदि माध्यमों से हिन्दू लड़कियों को प्यार में फँसाया जाता था फिर उनका धर्मांतरण कराके उन्हें विदेशों में बेच दिया जाता था।

❊ कोटा की एक छात्रा ने सुसाइड नोट में लिखा कि मुफ्त ट्यूशन के बदले उस पर चर्च जाने का दबाव डाला जा रहा था।

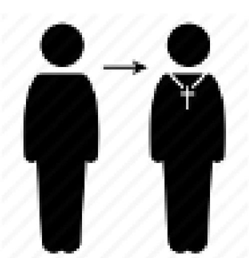

❊ बाँसवाड़ा में चिकित्सा शिविरों में लोगों को ईसाई बनने के लिए प्रलोभन दिये जा रहे थे।

❊ जयपुर के सामोद में गरीब लोगों को सिलाई मशीन के बदले ईसाई धर्म सभाओं में आने को कहा गया तथा झालाना में मुफ्त पुस्तकों के बदले पादरी द्वारा बच्चों को ईसाई धर्म अपनाने का प्रलोभन दिया गया।

❊ हनुमानगढ़ में धर्मसभा में लोगों को ईसाई प्रार्थना में सम्मिलित होने पर ही भोजन व वस्त्र प्रदान करने की शर्त रखी गयी थी।

❊ उत्तरी राजस्थान के झुंझुनूं तथा श्रीगंगानगर में प्रार्थना सभाएँ आयोजित करके एवं दक्षिण राजस्थान के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में आर्थिक

पालक

सिर्फ सब्जी नहीं, एक प्राकृतिक औषधि है

पालक पित्तशामक, शीतल, पचने में भारी, भोजन में रुचि बढ़ानेवाला, पेशाब साफ लानेवाला एवं सूजन तथा जलन को कम करनेवाला है। इसका रस तथा शाक यकृत (liver), आँतों के विकारों तथा कब्ज आदि रोगों में लाभकारी है।

पालक में विटामिन ए, सी, के तथा लौह, कैल्शियम, मैग्नेशियम, पोटैशियम, फॉस्फोरस तथा रेशे (fibres) आदि पाये जाते हैं।

पालक का सेवन मधुमेह (diabetes) में रक्त-शर्करा (blood sugar) को नियंत्रित करने में मदद करता है, कैंसर के खतरे को कम करता है तथा हड्डियों के लिए भी यह लाभकारी है। खनिज तत्त्वों, विशेषतः लौह (आयरन) से भरपूर होने से यह रक्तवर्धक है, रक्ताल्पता (anaemia) में उपयुक्त है। गर्भवती महिलाओं को पालक का सेवन अवश्य करना चाहिए।

इसे सलाद के रूप में कच्चा या रस निकाल के अथवा सब्जी बना के खा सकते हैं।

अब हवन से होगा

बीमारियों का उपचार !

अजमेर मेडिकल कॉलेज में माइक्रोबायोलॉजी विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजयलता रस्तोगी के नेतृत्व में किये गये एक शोध में पाया गया कि 'हवन सामग्री में प्रयुक्त जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक तत्त्वों से उत्पन्न धूआँ विशेष प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करने की क्षमता रखता है और शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। हवन का धूआँ नाक, मुँह और त्वचा के रोमछिद्रों से शरीर में प्रवेश कर संक्रमण फैलानेवाले जीवाणुओं को प्रभावित करता है।'

हवन सिर्फ श्रद्धा-भक्ति को प्रकट करने का माध्यम नहीं है, यह वातावरण को शुद्ध करने का एक वैज्ञानिक जरिया भी है और अब तो यह इलाज का भी माध्यम बन गया है।

अजमेर मेडिकल कॉलेज में माइक्रोबायोलॉजी विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजयलता रस्तोगी के नेतृत्व में किये गये एक शोध में पाया गया कि 'हवन सामग्री में प्रयुक्त जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक तत्त्वों से उत्पन्न धूआँ विशेष प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करने की क्षमता रखता है और

आत्मज्ञान की ऊँचाइयों की यात्रा करानेवाला सत्साहित्य

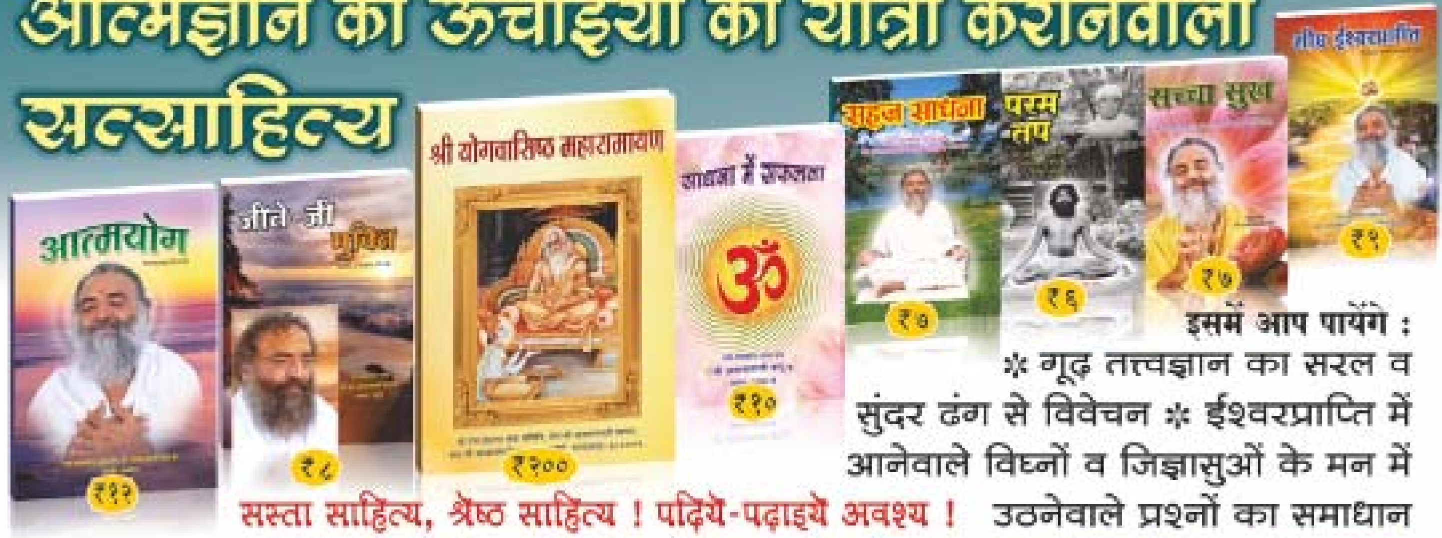

इसमें आप पायेंगे : ❊ गूढ़ तत्त्वज्ञान का सरल व सुंदर ढंग से विवेचन ❊ ईश्वरप्राप्ति में आनेवाले विघ्नों व जिज्ञासुओं के मन में उठनेवाले प्रश्नों का समाधान

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती, साधना चंदन धूप, साधना मोगरा धूप, साधना गूगल धूप

प्राकृतिक सुगंधयुक्त, हानिरहित धूपबत्तियाँ

❊ देशी गाय के गोबर और सुगंधित जड़ी-बूटियों के मिश्रण से निर्मित ये धूपबत्तियाँ वातावरण के हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करके पवित्र वातावरण का निर्माण करती हैं। ❊ तन को शुद्ध, मन को पवित्र और बुद्धि को विकसित करने में सहायक हैं। ❊ बुद्धिलाभ, स्वास्थ्य-लाभ, गौ-सेवा लाभ के साथ-साथ भक्तिलाभ देती हैं। ❊ स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती गोबर, गूगल, पलाश, बिल्व-पत्र, मिश्री एवं अन्य दुर्लभ जड़ी-बूटियों से निर्मित है।

सुरक्षा वटी

यह वटी रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ाकर सर्दी, जुकाम, बुखार आदि संक्रमणजन्य रोगों से सुरक्षा करती है। पाचनशक्ति बढ़ाकर साररूप सप्तधातुओं के निर्माण में मदद करती है। संक्रामक रोग होने पर इसके सेवन से शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होता है।

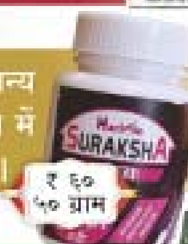

घृतकुमारी स्वरस (Aloe vera juice)

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है। त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है।

कपूर

❊ पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में यह उपयोगी है। ❊ वातावरण को शुद्ध करनेवाला है। ❊ संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है।

कफ सिरप

यह सभी प्रकार के श्वासनली के विकार, सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी है। बच्चों व बड़ों - सभीके लिए उपयोगी है।

संतकृपा गोलियाँ

प्राकृतिक औषधियों से युक्त गोलियाँ : बाजारू हानिप्रद गोलियों का उत्तम विकल्प

तुलसी गोली ➡ यह गोली तुलसी और त्रिकटु के मिश्रण से युक्त है। ये औषधियाँ सर्दी, जुकाम, खाँसी आदि कफ-संबंधी रोग एवं भूख की कमी को दूर करने में सहायक हैं।

एक ही पैकेट में पायें तुलसी, पुदीना व संतकृपा चूर्ण - ३ प्रकार की गोलियाँ !

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान

वर्ष २०२६

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (wall calendar), पॉकेट कैलेंडर व डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर
तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर।
ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar
सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। २ कैलेंडर लेने पर ₹ ५ की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ २५।
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १३ तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १२.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

तेजस्विनी भव अभियान बालिकाओं को बना रहा है साहसी, सुसंस्कारी व सत्पथगामी

संत और समाज के बीच सेतु बनकर पाया अनमोल प्रसाद

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल मुद्रक : विवेक सिंह चौहान प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी